चौथ माता का व्रत पुरूष की पत्नी, बेटे की माँ सभी को करना चाहिये। तेरह चौथ करनी चाहिये।

हे! चौथ माता जैसा साहूकार की बेटी का सुहाग अमर किया वैसा सभी का करना। कहने–सुनने वालों को, हुकांरा भरने वालों को सभी को अमर सुहाग देना। बोलो मंगल करणी दुख हरणी चौथ माता की जय।

ईसरजी पूजन का गीत

गौर–गौर गोमती, ईसर पूजे पार्वती।

पार्वती का आला–गीला, गौर का सोना का टीका,

टीका दे टमका दे रानी, व्रत करयो गौरा दे रानी।

करता–करता आस आयो, मास आयो।

खेरे–खाण्डे लाडू ल्यायो, लाडू ले वीरा न दियो,

वीरो मने पाल दी, पाल को मैं बरत करयो।

सन–मन सोला सात कचौला, ईसर गौरा दोन्यू जोड़ा।

जोड़ जवारां गेहूँ ग्यारह, रानी पूजे राज ने।

मैं म्हाके सवाग ने, रानी को राज बढ़तो जाय, म्हाको स्वाग बढ़तो जाय।

कीड़ी–कीड़ी कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है।

जात है गुजरात है गुजरात्यां रो पाणी, देदे थाम्बा ताणी,

ताणी में सिंघाड़ा, बाड़ी में भी जोड़ा।

म्हारो बाई एमल्यो, खेमल्यो, लाडू ल्यो पेड़ा ल्यो सेव ल्यो सिघाड़ाल्यो, झर झरती जलेबी ल्यो, हरी–हरी दोब ल्यो गणगौर पूजल्यो। (यह आठ बार / सोलह बार बोले)

अंत में एक ल्यो, दो ल्यो, तीन ल्यो, चार ल्यो, पाँच ल्यो, छः ल्यो, सात ल्यो, आठ ल्यो।

फिर हाथ में गेहूँ के आखे व जवारे लेकर गणगौर की कहानी कहें और सुनें।